॥ श्रीः ॥

उपदेशदशकम्

श्रीहरद्वार पातञ्जलाश्रमनिवासि-

स्वामितेजनाथ कृतम्

तच्च तेनैव

मुरादाबादस्थ-

लक्ष्मीनारायणमुद्रणालये

मुद्रापयित्वा प्रकाशितम्.

प्रथमावृत्ति, स० १९७१
PRINTED BY
LAKSHMI NARAYAN
at the Lakshmi Narayan Press,
Moradabad.

इस ग्रन्थ का सर्वाधिकार ग्रन्थकर्ताने स्वाधीन रक्खाहै ।

श्रीपरमात्मने गणनाथाय नमोनमः ।

❋ भूमिका ❋

चौपाई ।

व्याकर वन्दो ता ईशानम्, सब ते अधिक जो शक्तीमानम् ।
हमरि धियों का प्रेरक जोई, सर्वकर्म फलदाता सोई ॥

प्रकट है कि, जिसबात को लायक बुद्धिमान् कहैं और शास्त्रभी उसी बातको कथन करे तो फिर वह बात नहीं मानी जावे अर्थात् शास्त्र के और लायक बुद्धिमानों के कथन किये मार्ग में नहीं चलें तो बड़ी भूल है बड़ा नादानपन है क्योंकि शास्त्र और लायक बुद्धिमानों के कहेहुए मार्ग में उलटा अन्यथा चलें तो उसका फल नतीजा ज़रूर अच्छा नहीं होता किन्तु, उसका खराबही नतीजा होता है । इसलिये मैं सकलभ्रातृवर्ग से अतिप्रेम से कहता हूं कि, जो मैं लायक बुद्धिमानों के और शास्त्रके मुताबिक उपदेश दश लिखता हूं इनको खूब सोचो तथा और लायक बुद्धिमानों से मिलकर निर्णय करो कि हां, यह उपदेश ठीक हैं अच्छे हैं या नहीं । अगर निर्णय किये से ठीक उपदेश हैं तो हे प्रियपाठकजन, शास्त्रसे लायक बुद्धिमानोंसे निर्णीत मार्गमें चलो चाहे थोड़ा हर्जा भी हो क्योंकि शास्त्र और लायक बुद्धिमानों के ख्याल अतिबारीक और लंबे होतेहैं । अतः उनसे निर्णीतमार्ग में चलने से थोड़ा हर्जा होने पर भी फायदा बहुत होगा । जैसे प्रसिद्ध है कि औलेको खाया और बुद्धिमानों का कहा पीछे स्वाद देता है ।

श्रीः ।

उपदेशदशकम्

१-प्रातःसायं भजन ज़रूरकरो ज़रूरकरो।

प्रसिद्ध है कि, सर्वजीव सुखोंको और दुःखाभावको चाहते हैं सो सुख पुण्यों के विना नहीं मिलसकते जैसे कि पापोंके विना दुःख नहीं मिलते। इससे सर्वजीवों को मुनासिब है कि झूठ, धोखा, दगा, फरेब वगैरह के पापोंसे बचो और सदा सत्यवाक्,सत्यव्यापार,सरलतासहित परमात्मा का भजन करते हुए पुण्य को नित्य पैदाकरो तो निश्चय है कि फिर दुःख निवृत रहेंगे

१-अगर प्रातः सायं समय में थोड़ासा भी भजन नहीं करै तो मनुष्य शूद्र होजाता है यह धर्मशास्त्र में कई जगह कहा है।

और सुखकी वृद्धिहोगी अर्थात् सत्य वाकादि सहित परमात्मा का जितना अधिक भजन करोगे उतना अधिक फलहोगा ।

और यह भी विदित हो कि,शुभ अशुभ कर्म करने से चित्तमें पुण्य पाप उत्पन्न होते हैं उनको धर्म अधर्म भी कहते हैं वह पुण्य पाप अपने अपने फल देने तक बने रहते हैं ।

हे भ्रातृजन, अगर आप ज्यादा भजन नहीं करसकें तो भी १५ मिनट प्रातः १५ मिनट सायंकाल में ज़रूरही खर्चकरें क्योंकि भजन से बहुत ही फ़ायदे हैं । देखो !

श्लोकः—एकाहं जपहीनस्तु सन्ध्याहीनो दिनत्रयम् । द्वादशाहं निरग्निश्च शूद्र एव न संशयः॥

अर्थ—जो एक दिन जप, भजन नहीं करे और तीनदिन सन्ध्या नहीं करे और द्वादशदिन अग्नि-

होत्र नहींकरे सो शूद्रही होता है अर्थात् भजन नहीं करनेसे मनुष्य नीचहोते हैं और सत्यवाक् सरलता वगैरह सहित भजन करने से मनुष्य उत्तम होते हैं ।

२—भजन वगैरह से अपने २ किये पुण्य ही जीवों की सर्वत्र रक्षा करते हैं । जैसे कहा है:—

श्लोकः—वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवे पर्वतमस्तके वा । सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥

अर्थ—वन में शत्रुओं में जल में रण में और अग्नि में महासमुद्र में पर्वत के शिखर में पुण्य ही रक्षा करते हैं सोए हुएकी गाफिल की संकटमें फंसेहुए की भी पुण्य ही रक्षा करते हैं ।

३—अगर प्रातः सायंकाल में दशदश मिनट भी भजन में लगावेंगे तो उससे कई पाप नष्ट होवेंगे इससे कई दुःखों से बचोगे ।

४—अगर तुम प्रातः सायंकाल में दशदश मिनटभी भजन नहीं करोगे तो तुम्हारा मन परमात्मा से बिमुख होगा बेखौफ होगा मलिन होगा इससे मलिन हुआ मन छल झूठ बोलना वगैरह से तकलीफोंका बीज होगा।

५—अगर तुम छल झूठ वगैरह को छोड़कर अतिप्रेम से प्रातः सायंकाल में बीस बीस मिनट भी भजन में खर्च करोगे तो प्रसन्न हुआ परमात्मा तुम्हारा सहायक होगा जिससे तुम बहुत सुखोंके पात्र होगे। क्योंकि, परमेश्वर अतिशय न्यायकारी है। इससे छल झूठ कृतघ्नता वगैरहको छोड़के चित्तकी एकाग्रतारूप भक्तिका उत्तम फल देता है। बहुत क्या हे भ्रातः, मुक्तिपर्यंत सर्वपदार्थ भजन से मिल सकते हैं इससे जितना होसके प्रातः सायंकाल में

ज़रूरही भजन करना चाहिये ।

और यह भी मालूम हो कि, परमेश्वर का ध्यान और परमेश्वरके ध्यानसहित श्रेष्ठ मन्त्र का जप करना भजन है । मन्त्रके ऋषि देवता वगैरहको एकवार उच्चारण करके मन्त्रका जप करना चाहिये । अतः ऋषिवगैरहके ध्यान को लिखकर मन्त्रों में अतिश्रेष्ठ गायत्री मन्त्रको लिखता हूं ।

हेभ्रातः, अगर प्रातःकालमें स्नान कुछ नुक़सान नहीं करता है अनुकूल है तो प्रातःकाल स्नान ज़रूर कर लीजिये । अगर प्रातःकालमें स्नान अनुकूल नहीं है तो जिसवक्त अनुकूल होवे उसी वक्त स्नान करो, क्योंकि धर्मशास्त्र वगैरह में और लायक बुद्धिमानों में भी यह निर्णीत है कि, रोगादिकों से शरीरकी रक्षा करनी ज़रूरीहै ।

विचारो कि, शरीर निरोग होगा ताक़तवर होगा तो आप धर्मकार्य और व्यापार वगैरह करसकोगे अगर शरीर रोगग्रस्त होगा तो आप दुःख देखने के बिना और कुछ नहीं कर सकोगे । इसलिये अगर स्नान नुक़सान करता है अनुकूल नहीं है तो प्रातःकालमें स्नान मत करो, किन्तु शौचक्रिया करके दंतशुद्धि, दांतन ज़रूर ज़रूर ही करो, क्योंकि दांतन करने से मुख शुद्ध होता है । दांत मोतियों की नांई सुन्दर ख़ूबसूरत लगते हैं । कफ दूर होता है, नेत्ररोग, दांतरोग, कण्ठरोग दूर रहते हैं इत्यादिक बहुत ही फायदे दांतन करने के हैं ।

और दांतन नहीं करने से मुख अशुद्ध रहता है । दांत बदसूरत लगते हैं, मुख में दुर्गन्ध आने

लगती है, मैले दांतों को देखकर दूसरे का चित्त कच्चा होता है, नफ़रत करता है। इसीसे हाकिम वगैरह उसको देखा ही नहीं चाहते। और दांतों में, नेत्र में, कण्ठ वगैरह में रोग पैदा होते हैं। बहुत क्या दांतन किये विना प्रेतवत् मनुष्य दरिद्री होते हैं। इससे मुनासिब है कि, प्रतिदिन "हररोज़" दांतन ज़रूर ही करनी चाहिये।

और धर्मशास्त्र में कहा है कि, अपवित्र मनुष्य-भी परमात्मा के भजन से बाहर भीतर पवित्र होजाते हैं। इससे स्नान प्रातः काल में अनुकूल हो तो करो नहीं तो मतकरो। परंतु परमात्माके भजन में विघ्न मतकरो, नागा मतडालो, भजन के बडे उत्तम फायदे को मत खोवो। देखो गया वक्त हाथ नहीं आता इससे अपनी आयु को व्यर्थ मत खोवो, किन्तु हाथ पैर मुख वगैरह

धोकर कोमल आसन पर पूर्वाभिमुख बैठो फिर तीन आचमनकरो । फिर–

ॐ अस्य श्रीगायत्रीमहामन्त्रस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दःश्रीपरमात्माऽन्तर्यामी देवता सकलदुरितदलनपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रसादार्थं जपे विनियोगः ।

अर्थ–इसका एकवार ही पाठकरो इस का अर्थ यह है कि, इस गायत्री महामन्त्रका विश्वामित्र ऋषि है गायत्री छन्द है श्रीपरमात्मा अन्तर्यामी देवता है सर्व पापों के नाशपूर्वक श्रीपरमेश्वरकी प्रसन्नता के लिये जपमें विनियोग है, प्रवर्तन है।

अथ ध्यानम् । अंगुष्ठमात्रो रवितुल्यरूपः सदा जनानां हृदि सन्निविष्टः ॥

ध्यायेत्तमीशं खलु योवितन्द्रःपापक्षयेऽर्थान् लभते स इष्टान् ॥

अर्थ–सूर्य की नाईं चित्प्रकाशरूप सदा सर्व जीवों के हृदय में स्थित आकाशवत् व्यापक भी जो परमात्मा चित्तरूप उपाधि से घटाकाशवत् अंगुष्ठमात्र है उस ईश्वर का जो निरालस हुआ ध्यान करता है वह पापों के क्षय होनेपर वाञ्छित मोक्षादि पदार्थों को पाता है ।

इस श्लोक का भी एकवार ही पाठ करो फिर हाथ पैर मुख वगैरह अङ्गोंको निश्चल रखकर शरीर को ढीला छोड़ परमात्मा का जितनी देरतक ध्यान होसके ध्यान करो जब ध्यान में चित्त नहीं लगे तब फिर–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

इस गायत्री महामन्त्र की एक माला दो-माला या ज्यादा जितनी होसके ध्यानसहित जपकरो, वह जप मुख में ऐसे हौले करना चाहिये कि, अति नज़दीक बैठा भी दूसरा मनुष्य नहीं सुनसके । अगर एकमाला भी जप नहीं होसके तो कुछ काल ध्यान करके दशमन्त्र प्रातः दशमन्त्र सायङ्काल में जरूर ही जपो । दोनों वक्त ऐसे भजन में नागा मत होने दो । भजन बिना आयु व्यर्थ मत खोवो । और मन्त्रका अर्थ यह है । भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक ॐ परमात्मा से व्याप्त है अर्थात् परमात्मा सर्वत्र व्यापक है ।

प्रार्थनायोग।

सर्वजगत् के पैदा करने वाले उस देव के प्रार्थनीय स्वप्रकाशरूप तेजका हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों का प्रेरक है अर्थात् शुभाशुभ

कर्मोंके फल भोगवाने लिये सर्वजीवों की बुद्धियोंका प्रेरक है वा जो हमारी बुद्धियों को ध्यानादिक शुभमार्ग में प्रेरै ।

हे प्रियपाठकजन, प्रातः सायं भजनवक्त में अगर और अनेक काम होवें तो भी अनेक काम एकदम छोड दो भजन के बराबर और कोई काम मत समझो अगर आप ज्यादा नहीं करसको तो भी दशदश मिनट प्रातःसायंकाल में ज़रूर ही भजनमें होशियार होओ । अगर आप भजन के वक्त गाढ़ीपर सवार हैं, या दुकान पर हैं, या जहां कहीं हैं वहांही भजनके वक्त भजन में होशियार होजावो अगर आप गाडीपर बहुत मनुष्योंमें बैठे हैं और जलभी नहीं मिल सकता तो भी भजन में नागा मतकरो किन्तु ऐसी हालत में परमात्मा का ध्यान करके मानस जपकरो । अगर आप मार्गमें पैरोंसे चलरहे हो या

घोड़े टमटम पर सवार हो तो भी आप भजन के वक्त दश मिनट घोड़े टमटम से उतर के अचल आसन में बैठकर भजन के दश मिनट भजन में ज़रूरी लगा दीजिये। बहुत क्या जहांतक होसके भजन के वक्तको भजन विना मत जानेदो अगर लाचारी किसी सबब से भजन का वक्त चला जावे तो फिर फुरसत पाकर उतना वक्त भजन में लगाकर भजन का वक्त पूरा कर दीजिये। मत लब यहहै कि, भजनके वक्तकी वृद्धि तो हो लेकिन भजन का वक्त हरगिज़ कम न होना चाहिये। अगर प्रातः सायं भजनवक्त के सिवाय आप चलते फिरते अनेक काम करते हुये परमात्मदेव के चेतनस्वरूप ज्योतिः का ख्याल करते रहो तो बहुत ही बेहतर है बहुतही फायदे पाओगे।

२-सत्य बोलना सीखो सिखावो झूठ से बचो बचावो ।

हे प्रियभ्रातृजन, वेद शास्त्रादिकों में सत्यबोलने के बराबर पुण्यकर्म नहीं है और झूठके बराबर पापनहीं है। देखो, अथर्वणवेदकी मुंडक उपनिषद् में भी कहाहैः—"सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः"। अर्थ-सत्यही सबसे श्रेष्ठ है, सत्यकी ही जयहोती है, झूठ श्रेष्ठ नहीं, झूठ की जय नहीं होती, ब्रह्मलोक का विस्तृत देवयानमार्ग सत्य से ही मिलता है । हे भ्रातः, जब बहुत तरफ ख्याल देता हूं तो सत्यकी ही जय देखने में आती है । अगर किसी के जगेमें प्रबल प्रारब्ध से उलटा देखने में आवे तो भी आखरी सत्यकी ही जय होती है और महाभारतमें भी कहा है कि तराजू के एक तरफ हज़ार अश्वमेध रक्खें

और एक तरफ सत्यभाषण रक्खें तो हज़ार अश्व-मेधयज्ञ सें सत्यही अधिक ज्यादा होता है। और चारों वेदोंको पढे और सर्वतीर्थों में स्नान करे तो भी सत्य के बराबर नहीं होत। विचारिये कि, जिन कर्मोंमें धनका ख़र्च और शारीरादिकों से तकलीफ उठानी पड़ती है ऐसे यज्ञ दान व्रत गंगास्नान वगैरह से भी सत्य का फल ज्यादा कहा है। क्योंकि, सत्य बोलने से बिना यज्ञ दान व्रत वगैरह का भी फल नहीं होता। ऐनादान, जिसमें एक पैसा भी ख़र्च नहीं होता और ज़रा सी भी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती और सर्व यज्ञ वगैरह से अत्यन्त ज्यादा पुण्योंकी वर्षा करने वाला है ऐसे सत्यरूप सर्वोत्तम कर्मको तुम क्यों नहीं सर्वदा सेवन करते।

१—सत्य बोलनेसे परमेश्वर प्रसन्न होताहै।
२—अपना मन खुश होता है शुद्ध होता है।

३–सुनने वाला खुश होजाताहै नरम होताहै ।
४–सत्यवादी पर लोग यक़ीन करते हैं ।
५–माल जान से लोग मदद करते हैं ।
६–सत्य बोलने से धर्म पैदा होता है ।
७–सत्य धर्ममें सुखोंकी वृद्धि होती है ।
हेपाठक, अगर मैं सत्य बोलने के फायदे कई महीने लिखता रहूं तो भी खत्म नहीं होंगे । इसलिये मैं संक्षेपसे लिखताहूं कि, सत्यके बराबर परमेश्वरको खुश करने वाला और कोई काम नहीं है । देखो, वेदादिकों में और मुसल्मान, ईसाई वगैरह सर्वमतों में सत्यभाषणको उत्तमही गिनते हैं । अतः सत्यको मेरा प्रणाम है । भाव यह है हमेशा सत्य बोलने वालोंको मेरा बहुत मानसे नमस्कार है चाहे वह किसी मज़ब के हैं किसी जाति के हैं ।

हेपाठक, झूठ बोलना जैसा और पाप भी

कोई नहीं है । देखो, अथर्ववेदके प्रश्नोपनिषद् में छठे प्रश्नके पहिले मन्त्र में भी कहाहैः—

समूलो वा एष परिशुष्यति योऽनृतमभिवदति ।

अर्थ—वह मनुष्य मूलसहित सूख जाता है जो झूठ बोलता है । और आत्मपुराण में भी कहा हैः—अपि प्रसिद्धा लोकेऽस्मिन्नधमाः पुरुषाहि ये । अधमः प्रथमस्तेषु योऽनृतं वक्ति मानवः।

अर्थ-इसलोकमें जो नीचपुरुष प्रसिद्धहैं उन में वह अव्वल दर्जेका नीच है जो झूठ बोलने वाला है । तुलसीदासजी ने भी कहाहै÷नहि असत्यसम पातक पुंजा कि दोकि गिरिसम कोटिकगुंजा ॥ अर्थ--पापोंके पुंजभी झूठके बराबर नहीं होते जैसे करोड़ों रत्तियां भीक्या पर्वतके बराबर होसकती हैं अर्थात् और पाप रत्तियोंके बराबर हैं और झूठ रूप पाप पर्वतके बराबर है जैसे करोड़ोंभी रत्तियाँ इकट्ठी करें तो वह पर्वत

नहीं होजातीं ऐसेही और करोड पाप एक झूठ के बराबर नहीं होते । हेप्रियपाठक, झूठके निहायत सख्त पापसे बचो और अपने सम्बन्धी वगैरह को भी उपदेश करके बचाओ अगर ज्यादा सुख चाहते हो तो सर्वधर्मों के बीजरूप सत्य का पालन करो ।

२-छोटे लड़केकी शादी भूलकर भी मतकरो मतकरो ।

लड़केको कमसे कम अठारह वर्षके हुए पहिले शादी मतकरो । अगर चौबीस वर्ष के या इक्कीसवर्ष के हुए लड़केकी शादी करो तो यह बहुतही अच्छा कामहै, परन्तु अठारहवर्ष से पहिले भूलकर भी लडके की शादी मत करो । देखो, छोटे लड़केकी शादी करनेसे बहुत जगह कन्या वरका परस्पर प्रेमही नहीं होता इससे पिताके, सुसरालके दोनों घरोंमें खेदही

होताहै । अगर कहीं छोटे कन्या वरका परस्पर प्रेम होवे तो वे कन्या वर दुर्बल रहेंगें, और किसीएक रोगसे दबे रहेंगे, भीरु होंगे, ज्यादा बडे नहीं होंगे, और उनकी संतान भी दुर्बल होगी, भीरु होगी, ज्यादा बडी नहीं होगी अर्थात् उनकी संतान छोटी ही रहैगी। छोटे लडकेकी शादी करनेसे इत्यादिक अनेक हर्जे होते हैं । चौबीस वर्षके या इक्कीस वर्षके लडकेकी शादी करोगे तो कन्या वर बलवाले रहेंगे । भीरु नहीं होंगे उनकी सन्तान भी बडे क़दकी बलवाली होगी, भीरु नहीं होगी इत्यादिक बहुत ही फायदेहोंगे। अफसोसहै ! अफसोसहै! ॥ कि, माता पिता वगैरह छोटे लडके की शादी करनेसे अपनी तो कुछेक खुशी देख लेते हैं, परन्तु लडके कन्या की खुशी और खिन्नताकी तरफ ज़रा सा भी ख्याल नहीं करते अर्थात् यह

नहीं सोचते कि, छोटे लडकेकी शादी करनेसे हमतो खुशी देखलेंगे लेकिन शादी होनेके पीछे यह लडका और कन्या भी खुश होवेंगे या खिन्न होवेंगे । आश्चर्यहैकि, अपनी थोडी सी खुशीसे भूलेहुए बेसमझ लोग ऊपर कहे नाना नुकसानोंकी तरफ जरासाभी ख्याल नहीं देते ।

हेभ्रातृजन, मनुस्मृतिवगैरह धर्मशास्त्रमें तो तीस वर्ष के या चौबीसवर्षके लडके की शादी करनी कहीहै मैंने तो संकोच से लिखाहै कि, कम से कम अठारहवर्षके हुए पहिले लडकेकी शादी मतकरो, अगर चौबीसवर्ष या इक्कीस वर्ष के हुए लडके की शादी करोगे तो बहुतही फायदे होवेंगे और लायक बुद्धिमानों से मिलकर आप निर्णय भी करलीजिये कि, हाँ ! यहबात ठीक है या नहीं, अगर ठीकहै तो छोटे लडके की शादी भूलकरभी मतकरो मतकरो।

४-वरसेआठवर्षछोटीकन्याहोनीचाहिये।

अगर वरसे कन्या बडी होगी या बराबर होगी तो कन्या वर का परस्पर ज्यादा प्रेम नहीं होगा बल्कि आपसमें नाराज़गीका होना संभवहै इससे पिता और सुसराल दोनों घरोंमें खेद ही होताहै। वरसे कन्या जितनी छोटीहोगी उतना ही उनका आपसमें प्रेम ज्यादा होगा जिससे पिता और सुसराल दोनों तरफके सम्बन्धिओंके चित्त खुशरहेंगे और उनसे संतानभी बडे क़दकी बलवाली बडे दिमाग़की पैदाहोगी इत्यादिक और भी बहुत फायदे होंगे।अतःशास्त्रसे और लायक बुद्धिमानों से निर्णय करके लिखा है कि,वरसे आठवर्ष छोटी कन्या की शादी करो। हेप्रियपाठक, विचारोकि शादीकी खुशी देखनेलिये पुत्रकी वा कन्याकी शादी करनी मुनासिब नहीं है किन्तु वरके और कन्या के सुखके लिये आरामके लिये शादीकरनी मुनासिब

है, अगर बारीक लम्बे ख्यालसे बरके कन्याके सुख आरामको नहीं सोचा सिर्फ अपनी खुशी देखने के लिये शादी करदी तो वह मानो अपने पुत्रके कन्याके गलेमें बोझ डालकर तकलीफ दी है उनकी आयु दुःखरूपही करदी है ।

५-विद्या जरूरी पढो पढावो ।

देखिये, विद्या विना इज्जत की नौकरी भी नहीं मिलसकती। विद्या बिना व्यापार हिसाब वगैरह भी नहीं होसकते विद्या विना लायक मनुष्योंमें मान भी नहीं मिलसकता बहुत क्या विद्याविना बोलने की बैठने कीभी लियाकत नहीं होती किन्तु विद्याविना खत पत्र लिखबाने पढ़ाने बगैरह छोटे छोटे कामों की भी दीनता बनी रहतीहै विद्याविना जीवका ईश्वरका माया का बंधका मोक्षका बंधके कारणका मोक्षकेकारणका धर्मका अधर्मका भक्तिका ज्ञानका योग वगैरहका

ज्ञानभी ठीक ठीक नहीं होसकता। अतःविद्या विना मनुष्य पशुवत्होतेहैं। हेपाठक,विद्या पढे विना बहुत ही नुकसान है इसीसे कहाहै "माता शत्रुः पिता बैरी येन बालो न पाठितः"। अर्थ–जिसने अपने बालकको नहीं पढाया वह माता मानों बालककी शत्रु है वह पिता मानों अपने आपने बालक का बैरी है।

हे भ्रात,विद्यासे इज्जतकी नौकरी मिलती है व्यापर हिसाब वगैरहभी करसकतेहैं लायक मनुष्यो में मान मिलताहै।लियाकत बड़ी होतीहै और मोक्षशास्त्रों के पढने से मनुष्य जीव ईश्वर धर्म अधर्म वगैराओं कोभी जानसकताहै।पुनःनिदिध्यासनादिद्वारा मोक्षपदकोभी प्राप्त होसकता है इत्यादिक बहुतही विद्यासे फायदे हैं।

अतएव सर्वविद्याओं में मुख्य संस्कृतविद्या पहिले आपको ज़रूरी पढनी चाहिये और अपने

स्त्री पुत्र कन्या भाई वगैरह को भी ज़रूरही पढानी चाहिये।संस्कृतविद्या में भी महर्षिरचित ग्रन्थोंको ज्यादा २ पढना चाहिये, और पुत्र भाई वगैराओं को अंगरेजी विद्याभी पढानी चाहिये और कन्या को सीना वगैरह भी सिखलाना चाहिये।

६-सन्तानको हितोपदेश जरूरकरो जरूरकरो ।

अगर औलाद को अच्छी अच्छी नसीहत नहीं करी जाती तो वह बेसमझ औलाद अपने माता पिता सास ससुर बगैरह बडोंका निरादर करती है इससे महापाप पैदा होते हैं। घरमें दुःखोंका बीज कलकल बनी रहती है।सुख आराम चलेजातेहैं इत्यादिक बहुतही हर्जे होते हैं इससे ज़रूरही मुनासिब है पुत्र को कन्याको छोटेभाई वगैरह को अच्छी अच्छी नसीहत करो कि,जैसे माता पिता पहिले गुरुहैं वैसेही सास ससुर वगैरह बडे भी

माता पिताकी नांई गुरु हैं पूज्यहैं इससे माता पिता दादी दादा सास सुसर वगैरह बड़ोंकी सेवा करके बड़ोंसे आशीर्वाद लेना चाहिये क्योंकि,जो बड़ोंकी सेवा करके बड़ोंसे आशीर्वाद लेते हैं वह सुखी रहते हैं मालोमाल रहते हैं वह तंगी तकलीफ नहीं देखते।बहुत क्या।लायक बुद्धिमानों से पूछदेखो बड़ोंकी खुशीसे बहुतही फायदे हैं अगर तुम माता।पिता सास सुसर वगैरह बड़ोंकी इज्जत सेवा नहीं करोगे तो तुम कृतघ्न होगे। क्योंकि देखो वही माता।पिता हैं जो अपने मुख से बचाकर तुम्हारे मुखमें देतेरहे आप तकलीफें उठाकर भी तुम्हारा पालन करते रहे बालपनमें बड़ी कोशिश से तुम्हें चोटचाट से बचाते रहे। तुम्हारी सेहत के लिये बड़ी फिकर से कई तरदुद भी करते रहे कभी तुम्हें थोड़ीसी भी तकलीफ होनेसे बड़ी तकलीफ पातेरहे। तुम्हें खुशी

देखकर बड़ेखुशी होतेरहे तुम्हें दुखी देखकर दुःखके समुद्र में डूबते रहे तुम्हारे लिये देवी देव पीर फकीरों को भी मनाते रहे तुम्हारा भला तो हरदम ही चाहतेरहे । बहुत क्या! नफ़रतको छोड़कर तुम्हारा मलमूत्र भी उठाते रहे तुम्हारे पढ़ाने सिखाने शादी वगैरह के लिये बहुतही दीनता भी करते रहे तुम्हारे आराम के लिये तो मारे मारे ही फिरतेरहे । तुम्हारे लिये मकान धन जायदादों का इन्तज़ाम भी करते रहे बहुत क्या कहूं जो कुछ करतेरहे सो तुम्हारे लियेही करते रहे ।

रे कृतघ्न, अब उनसे तुम मुख फेरे पाससे चले जाते हो । रेपापी नादान, अब वृद्धहुवे उनही माता पिता दादी दादा वगैरह से तुम बात करनाभी नहीं चाहते हो । रेबेसमझ, छोटेसे औदे को पाकर नौकरी के दर्जेमें होकर भी तुम उन्हीं

बड़ोंके पास नीचे बैठते भी अब नफरत करते हो, जिनके जूठे टुकड़ोंसे तुम पलेहो । रे बेवकूफ अब उनको तुम कुछभी नहीं समझते हो अगर तुम अपना माल जान धन वगैरह सर्वस्व भी बड़ोंकी नज़र करदो तो भी उनके अहसानोंसे क्या तुम फारिग होसकते हो । हेपुत्र, जिस सास सुसरने पाल पोषके अपने प्राणों से प्यारी कन्या तुमको पकड़ादी उन से विमुख हुए तुम क्या कृतघ्न नहीं हो । हे पुत्रि, जिस सास सुसर वगैरहने पाल पोषके अपने प्राणोंसे प्यारा पुत्र तुम्हारे सुपुर्द करदिया अपने घर जायदाद की मालिक तुम्हें बनादिया वे सास सुसर वगैरह मनोहर जोड़ी को देख २ कर प्रसन्न होते हैं फूले फूले फिरते हैं उनसे बरखिलाफ हुई तुम क्या उनकी कृतघ्न नहीं हो । हे प्रियभ्रातः, तुम अनेक यज्ञ दान व्रत तीर्थ वगैरह करके

भी क्या कृतघ्नता के महापापसे छूट सकते हो। क्योंकि तुम धर्म के ज्ञाताओं से पूछ देखो कि कृतघ्नता जैसा और कोई भी पाप है। बहुत क्या! याद रक्खो जो बड़ोंको सताते हैं वे अवश्य तकलीफ पाते हैं इससे माता पिता दादी दादा सास सुसर वगैरह बड़ोंकी मन वाणी शरीर धनादिकोंसे सेवा करके उनसे आशीर्वाद लेनाही अच्छा है।

७-गौयें जरूर रक्खो जरूर पालो ।

हेभ्रातृगण, एक दो या चार गौयें अपनी अपनी हैसियतसे जितनी रखसको गौयें ज़रूरही रक्खो अगर ज्यादा नहींरखसको तो कमसे कम एक गौ ज़रूरही रक्खो। हेपाठक,देखो इससमय में गोबरभी कीमती चीज़है, दूध दधि माखन मठावगैरह का तो क्या कहनाहै। अतः गौकी सेवा और हाकिमोंकी सेवा व्यर्थ नहीं जाती। देखने में आताहै कि, हमारे भाई भैंसोंको शौकसे रखते

हैं गौओंके रखनेमें प्रेम नहीं करते यह उनकी बड़ी बेसमझीहै बड़ी भूलहै बड़ा नादानपनहै। क्योंकि वे गौके मठा दधि माखन दूध वगैरहके फायदों को नहीं जानते और भैंसके मठा दधि दूध वगैरह के बड़े नुक़सान देने वाले दोषों को नहीं जानते। ऐनादन, अगर तुम नहीं जानतेहो तो डाक्टर यूनानी हकीम हिन्दूवैद्य वगैराओंसे और लायक बुद्धिमानों से भी मिलकर पूछो कि गौके मठा दधि दूध माखन वगैरहके कितने कैसे फायदे हैं और भैंसके मठा दधि दूध वगैरहके कितने कैसे नुक़सान देने वाले दोष हैं।

देखो, आज परमेश्वरकी कृपा के पात्र विद्या बुद्धि नीति वगैरह के ख़ज़ाने फिर जिनका खाना पीना भी डाक्टरोंकी राय बिना नहीं होता ऐसे लायक बुद्धिमान् अंगरेज़ भी दूध माखन अक्सर गौ का ही वर्तते हैं तो हेभ्रातृगण, तुम्हारी

बुद्धि पर क्यों परदा पड़गया अगर तुम ऐसा ख्याल करते हो कि, भैंसके दूधसे माखन बहुत निकलैहै इससे गौ रखनेमें हर्जा है तो आप यह भी विचारो कि, तीन या दो गौओं का ख़र्चा एक भैंस पर लगता है और दूध माखन तो ख़ुराक पर है । अगर तुम गौको भी (बिनौले) बंडेवें वगैरह अच्छी ख़ुराक दो तो गौसे भी माखन दूध बहुत लेसकते हो ।

अच्छा अगर तुम्हारी ही बात माने कि, भैंस रखनेसे गौ रखने में हर्जा है तो भी ज्यादा माखनका दो रुपये या चार रुपये महीनेका हर्जा मञ्जूर करना चाहिये क्योंकि भैंस रखने से और बहुत हर्जे हैं। एक तो लड़के वगैराओंकी बुद्धि मोटी होनी बड़ा हर्जा है जोकि हज़ारों रुपये ख़र्चने से भी बुद्धि बारीक नहीं होसकती दूसरे मंदाग्ने होनी सेहत ठीक न रहनी इत्यादिक

बहुत बड़े हर्जे हैं अगर बहुत हर्जे न होते तो भैंस के दूध दधि वगैरह से मरीजोंको बालकोंको डाक्टर हकीम क्यों रोकते। गौके दूध दधि वगैरह बुद्धिको बढ़ाते हैं बारीक करते हैं सेहतको ठीक करते हैं दिल दिमाग़को ताक़त देते हैं इत्यादिक बहुतही बड़े फायदे हैं। अगर ऐसे बहुत फायदे नहीं होते तो डाक्टर हकीम वैद्य वगैरह गौके दूध दधि मठा वगैरहकी बड़ाई क्यों करते। इसीसे अपनी हैसियतसे दो चार जितनी रख-सको गौयें ज़रूरही रक्खो। देखो, एक तो दूध दधि माखन मठा गोबर वगैरहसे फ़ायदा और दूसरे गौओंकी रक्षा होगी।

८-जो कार रोज़गार मिले सो करो भूँखे मत मरो।

आश्चर्य है कि, बहुत लोग मनमाना रो-ज़गार नहीं मिलने से बेकार हुए भूँखे मरते

हैं बेचैन रहते हैं तकलीफें पाते हैं । परन्तु जैसी कैसी कार नहीं करते वे कहते हैं कि, हम घराने के हैं जैसी कैसी कारसे हतक होतीहै और जैसी कैसी कारमें तकलीफ होतीहै। हेपाठक, यह उनकी बड़ी भूलहै बड़ी बेसमझी है। क्योंकि, यह जगत् दर्पणकी नाईं है जो कोई जैसा होताहै वह वैसाही जगत्में रोशन होता है जगत्में छिपा नहीं रहता । ऐनादान, जब तुम घराने के थे तब वैसे ही रोशन थे अब तुम जैसे हो वैसे ही रोशनहो । इससे जैसीकैसी कारसे अब तुम्हारा हतक नहीं है किंतु, बेकार रहनेसे हतक है क्योंकि, बेकार मनुष्यसे लोग मुख फेरलेते हैं ज्यादा बात भी नहीं करना चाहते । विचारो,ज्यादा तकलीफ तो बिनाकार रोजगार भूँखे रहनेसेहै सरुतकारसे तकलीफ मानें तो तकलीफ भासे असलमें तो सरुतकार करने

से शरीरमें ताक़त बढ़ती है । इससे सख्तकार से घबड़ाना नहीं चाहिये सख्तकार पहिले करना चाहिये । हे प्रियभ्रातः, अगर कपड़ा सीनेका काम मिले तो करलो भार उठानेका काम मिले तो उठालो, पहरा देनेका काम मिले तो होशियार होजाओ । पकाने का काम मिले तो पकालाओ, जलका काम मिले तो जल भर लो, गौ बकरी चरानेका काम मिले तो चरा लो, झूठ चोरीका काम मिले तो न लो और कोई कार मिले तो करलो, । परंतु नियतको अच्छी सफ़ा रक्खो । अगर तुम नियतको अच्छी रक्खोगे तो तरक्की, वृद्धि पावोगे मालोमाल होवेगे । जैसे बड़ोंकी कहावत है कि, नियत साफ़ तो खीसापुर इससे नियतको सफ़ा रक्खो और बेकार मत रहो । किन्तु, जैसा कार मिले वही करो और बड़े रोज़गारकी तरफ़ और

हुनर सीखनेकी तरफ़ ख्याल रक्खो जब बड़ा रोज़गार मिले तब वह करलेना अभी तो बेकार मत रहो । क्योंकि,ज्यादा आशा रखने से कार्य झटिति सिद्ध नहीं होता किंतु, धैर्यहो थोड़ी आशा रक्खे तो कार्य अक्सर सिद्ध होजाते हैं।

९-धनव्यवस्था ऐसे कीजिये ।

बहुत लोग ऐसे देखने में आते हैं कि, कमा कर ज्यादा जमा करनेकी तरफ ख्याल रखते हैं परोपकार में तो कहां खानपान में भी ख़र्च नहीं करते वे नादान यह नहीं समझते कि, अगर सन्तान शुभ निकली तो वह सुपुत्र खुद जमा करसकेगा, शुभ सन्तान के लिये ज्यादा जमाकी ज़रूरत नहीं । अगर सन्तान अच्छी न निकली तो वह कुपुत्र कुमार्ग में धनको नष्ट

करैगा और आपभी कुमार्गसे रोगग्रस्त पापग्रस्त होगा, इससे कुपुत्र के लिये थोड़ीसी जमाकी भी ज़रूरत नहीं। प्रश्न-जो कमावे सो क्या सब लुटादेवे? उत्तर-हेप्रियपाठक, ऐसे नहीं करे किन्तु घबरावो नहीं सुनिये। अगर कमाई की आमदनी बहुत नहीं है थोड़ी है तो एक रुपये में एक आना जमा रक्खो बाक़ी सब पेट भर के खावो और अपने बच्चोंको वृद्धोंको खुलावो। अगर दो या तीन रुपये रोज़की आमदनी है तो एक रुपये में दो आने के हिसाब से जमा रक्खो और एक रुपये में आध आना। धर्मार्थ ख़र्च करो बाक़ी खाने पहिरने में रहने के मकान में लगावो आप खूब अच्छा मनमाना भोजन खावो अपने वृद्धोंको बच्चोंको स्त्रीको भगिनी

वगैरह सम्बन्धियों को खुलावो और साधारण हडनसार निर्मल वस्त्र पहिरो अपने वृद्ध बच्चों वगैराओंको पहिरावो। मान मान बुद्धिमानोंकी कहावत है। खाइये मनभौंदा पहिरिये जगभौंदा। अगर पांचसौ या हज़ार रुपये महीने की या ज्यादा आमदनी है तो चतुर्थांश अर्थात् एक रुपये में चार आना जमा रक्खो। जमाका यह तात्पर्य नहीं कि, मकान के भीतरही रक्खो किन्तु आमदनी के लिये जायदाद वगैरह पर लगावो। और एक-रुपयेमें आठआना अर्थात् आधी आमदनी को अपने बच्चे वृद्ध स्त्री वगैरहके खानपान मकान घोड़ा बग्गी टमटम नौकर वगैरह पर खर्च करो बाकी चतुर्थांश रहा सो धर्म्मार्थ लगावो धर्म्मार्थ

भी बहुत तो अपनी अपनी कौमके जो बेऐब सफेदपोश हों बेरोज़गारहों या किसी विपदाकी तकलीफसे लाचारहों उनको गुप्त देवो तो बहुत ही पुण्यहोगा । क्योंकि सुपात्रमें गुप्तदानसे परमेश्वर अति प्रसन्न होताहै, अगर तुम ऐसे नहीं करसको तो प्रकट दो । अर्थात् ऐसे लाचार गृहस्थिओंपर जिस किसी तरह हो ज़रूरही उपकार करो कि जिससे उनको तकलीफ न रहै । विचारो खौफ रक्खो कि सबपर सबदिन एकसे नहींहोते और ऐसे सफेदपोश किसी विपदामें फँसेहुए बेरोज़गार कबीलदार की तकलीफ़ को ऐनादान तुम नहीं जान सकते उनकी तकलीफ़ तो वहीं जानते हैं या लायक बुद्धिमान् कुछेक जानते हैं । और बिचारिये कि, महात्मा साधुओंको तो ज्या-

दा ज़रूरत भी नहीं होती और उनकी सेवा करने वालेभी जगत् में बहुत ही हैं और इतर साधु दूसरेसे तीसरेसे पांचवेंसे मांगकर भी गुज़ारा कर सकते हैं परन्तु लाचार गृहस्थी सफ़ेदपोशकी भीतर भीतर जलनेके बिना और कोई जगह नहीं । वनाग्निसे घिरेहुए तपेहुएकी नाईं लाचार गृहस्थियोंकी सहायताके लिये अगर धनकी वर्षा नहीं करे तो ऐसे धनका होना निष्फलहै।निष्फल कहां ; पापोंका और दुःखोंका बीज है। क्योंकि जब कोई एक भी कुपुत्र निकला तो वह कुमार्ग में धनको नष्टकरेगा ऐसे कुपुत्र जगत् में अक्सर निकलते ही रहते हैं । पुनः यह धन सदा एक जगहभी नहीं रहता किन्तु बिजली की नाईं कभी कहीं कभी कहीं जाचमकता है ।

इससे लाचार गृहस्थी भाइओंकी मददमें वह धर्म्मार्थ का रुपया ज़रूर ज़रूरही ख़र्च करना चाहिये और उसीमें सत्यवादी भजनानन्दी शान्तस्वभाव परोपकारी विद्वान् महात्मा साधुओं के और ऐसेही गुणवाले ब्राह्मणोंके सुखसे गुज़ारेके लिये भी खुशीसे ख़र्चकरो ।

१०-नानार्थ उपदेश सुनकर धारो धारो।

१-ज्यादा धन सम्पदावालोंको देखकर ईर्षा मत करो किन्तु खुशहोवो, और निश्चयकरो कि यह पुण्यवानहैं इससे ईश्वरके प्यारे हैं तो इनको परमेश्वरने धन सम्पदा इकबालवगैरह दिये हैं ।

२-गुणवानोंका हमेशा मान करना चाहिये ।

३-जो निश्छल निर्लोभ सफ़ा विद्वान् सत्यवादी लायक बुद्धिमान् साधु हो या गृहस्थीहो उन-

का सत्संग किया करो और भाई पुत्र वगैरहको करवाया करो। क्योंकि, ऐसे लायक जनोंके सत्संग से पुत्र वगैरह कुमार्गसे बचेंगे और सुमार्ग में चलेंगे।

४-छली लोभी झूठे मूर्ख वगैरहका संग न करो और पुत्र वगैरह को भी न करने दो।

५-पांच वर्षतक बच्चों से लाड़करो छठे वर्ष से दश वर्षतक ताड़ना रक्खो।

६-फिज़ूल ख़र्च मतकरो, ऊपर लिखी मर्यादासे चलो।

७-निर्निमित्त कटुवाणी मत बोला करो।

८-शरारती मुक़दमात कभी नहीं करने चाहियें।

९-बड़ी प्रातः समय जागना चाहिये।

१०-पहिले पिछले पहर या जब फुरसत हो तब तीन चार मील हररोज़ ज़रूर ज़रूर फिराकरो।

११-समय को व्यर्थ मत खोया करो किन्तु अपने २ रोज़गार वगैरहसे या विद्या के अभ्याससे या लायक बुद्धिमानों की संगति से और परमात्म देव स्वयंज्योतिःके ध्यानाभ्याससे समय व्यतीत करा करो ।

इति श्रीहरद्वारपातञ्जलाश्रमनिवासिस्वामिनेतजनाथकथितम्
उपदेशदशकम् सम्पूर्णम् ।

पुस्तक मिलनेका पता–

स्वामितेजनाथ

पातञ्जलाश्रम–हरद्वार.